फरकिया- एक फरक दुनिया

बिहार के खगड़िया जिले में आज भी कई ऐसे गांव हैं जहां कोई सड़क नहीं है. साल के छह महीने वहां धूल उड़ती है और शेष छह महीने ये गांव बाढ़ में डूबे रहते हैं. यहां पहुंचने के लिए पूरे साल नाव का सहारा लेना पड़ता है. सरकारी अमले में इन गांवों को कालापानी के नाम से जाना जाता है, किसी को सजा देनी हो तो इन गांवों में पोस्टिंग कर दी जाती है. वैसे इनमें से अधिकांश गांवों में शिक्षक, एएनएम से लेकर प्रशासन और पुलिस का कोई कर्मचारी नियमित तौर पर जाता ही नहीं है. लोग भगवान भरोसे रहते हैं. स्थानीय लोग इस इलाके को फरकिया के नाम से पुकारते हैं. हमारे संवाददाता पुष्यमित्र ने इन गांवों की यात्रा की है. पेश है इस इलाके के बारे में उनकी पहली रिपोर्टः

गुलरियावासी निर्धन सादा

शहरबन्नी निवासी साहेब साव

शहरबन्नी निवासी विश्वेश्वर चौधरी

लोजपा प्रमुख रामविलास पासवान के भतीजे शंभू पासवान

जानते हैं... राजा अकबर के नवरत्नों में मशहूर टोडरमल एक बार पूरे देश के जमीन की पैमाइश करने निकले. घूमते-घामते जब वे खगड़िया पहुंचे तो यहां सात-सात नदी बहती थी और नदी इतना धार-बदलती थी कि जमीन पैमाइश करने में उनका माथा खराब हो गया. जब उनसे इस इलाके की जमीन का पैमाइश नहीं हो सका तो वे नक्शा में इस इलाके को लाल कलम से घेर दिये. और कह दिये फरक-किया... तब से इस जगह का नाम फरक-किया और बाद में बदलते-बदलते फरकिया हो गया... उक्त जानकारी इस संवाददाता को उसकी अलौली यात्रा के दौरान स्थानीय विधायक रामचंद्र सादा ने दी. हालांकि इससे पहले भी उसे यह जानकारी एक बड़े सामाजिक कार्यकर्ता, एक बीडीओ और उनके कक्ष में मौजूद कई मुखिया और एक दारोगा दे चुके थे. विकीपीडिया पर भी यह जानकारी थोड़े बहुत बदलाव के साथ दर्ज है. मगर फरकिया कहां है, कितने इलाके में फैला है... इसका सटीक जवाब कहीं, किसी विशेषज्ञ के पास ठीक से नहीं मिलता.

कुछ लोग कहते हैं कि फरकिया दरअसल खगड़िया ही है. जबकि कुछ लोग मानते हैं इसका फैलाव खगड़िया जिले के अलौली, चौथम और बेलदौर प्रखंड तक है. वैसे समता संस्था के सचिव प्रेम कुमार वर्मा बताते हैं कि मौजूदा समय में इसकी सीमा बदला-नगरपाड़ा तटबंध के अंदर बसी 8-10 पंचायतों की दुनिया ही है. इस दुनिया को हमने अपनी मर्जी से वनवास दे दिया है, ताकि नदियों का पानी कभी तटबंध के पार के गांवों-शहरों को नहीं छू सके.

बदला-नगरपाड़ा तटबंध

उनकी इस राय की तस्दीक अलौली की बीडीओ विभा रानी भी करती हैं. वे कहती हैं कि उनके क्षेत्र में सबसे पिछड़े और दुर्गम पंचायत दहमाखेड़ी, आनंदपुर मारन और चेराखेरा ही हैं. ये पंचायत बदला-नगरपाड़ा तटबंध के अंदर बसते हैं. यहां आना-जाना सिर्फ नाव से हो पाता है. इस इलाके के किसी गांव में सड़क सुविधा नहीं है. ऐसे ही कुछ पंचायत चौथम और बेलदौर प्रखंडों में भी हैं जो इस तटबंध के अंदर बसे हैं.

बीडीओ के चेंबर में मौजूद कुछ मुखिया कहते हैं कि फिलहाल शहरबन्नी तक जाने के लिए सड़क है और एक पुल भी बना है. यह सब पूर्व केंद्रीय मंत्री रामविलास पासवान के प्रभाव से मुमकिन हुआ है. मगर इस इलाके को विकास की धारा से जोड़ने के लिए कई पुल और बहुत सारे सड़कों की दरकार है. क्योंकि सड़क तो इस इलाके के किसी गांव में नहीं है और नदी हर गांव के लोगों को पार करनी पड़ती है. शहरबन्नी जाते वक्त तटबंध से सटे करेह (बागमती) नदी पर बने पुल को पार करते ही इस बात की तस्दीक हो जाती है कि यह एक फरक दुनिया है. और यह सचमुच रामविलास पासवान के पैतृक गांव होने के कारण ही मुमकिन हुआ है कि हम बिना नदी पार किये इस गांव तक पहुंच गये.

छह महीने रहता है पानी से लबालब

पासवान के पैतृक आवास पर उनके भतीजे शंभू पासवान कहते हैं, जब तक पुल नहीं बना था यानी पिछले साल तक हमलोगों को भी नाव से नदी टपना पड़ता था. अभी भी बरसात में एक जगह टपना ही पड़ता है.

आगर घाटः यहां नाव पर गाड़ी चलती है

शहरबन्नी गांव का एक दृश्य, यहां भारत निर्माण होने में अभी दशकों लग जायेंगे

शहरबन्नी के निवासी साहेब साव बताते हैं कि उनका इलाका साल में पांच से छह महीने पानी से लबालब डूबा रहता हैं. उस समय हम लोगों को शहर के हर छोटे-बड़े काम के लिए नाव का सहारा लेना पड़ता है. नाव तो खैर हम लोगों के जीवन के साथ जुड़ गया है. जब बाढ़ नहीं आती है तो भी नदी तो होती ही है. जो गांव खुशनसीब होते हैं वहां के लोगों को एक बार, नहीं तो बहुतों को दो-दो, तीन-तीन बार नदी पार करना पड़ता है और दो नदियों के बीच पसरी 4-5 किमी तक की दूरी को पैदल या मोटरसाइकिल से तय करना पड़ता है. हां बारिश के महीने में सारी नदियां मिलकर एक हो जाती हैं तो नाव बदलने और पैदल चलने का झमेला नहीं होता. यह बात जरूर है कि तब एक टोले से दूसरे टोले जाना हो या अपने टोले में ही किसी दुकान पर तो सहारा नाव ही होता है.

पहले उगता था धान अब अल्हुआ

बदला-नगरपाड़ा तटबंध क्यों बना यह तो लोगों को नहीं मालूम मगर शहरबन्नी के एक 75 वर्षीय व्यक्ति विश्वेश्वर चौधरी कहते हैं कि बांध बनने से पहले यह गांव काफी सुधरा हुआ था. गांव में धान की बढ़िया खेती होती थी. बाढ़ भी यहां नहीं के बराबर आता था. उनकी पत्नी सीता देवी कहती हैं कि बांध के बाद तो यहां खाली अल्हुआ और खेसारी उगता था. मकई और गेहूं पिछले आठ-दस साल से होने लगा है.

एक आश्चर्यलोक

साहेब साव की बात की तस्दीक करने के लिए यह संवाददाता शहरबन्नी से आगे बढ़ता है और आगर घाट पहुंचता है. धूल भरी कच्ची सड़क पर लगभग नौ किमी यात्रा करके. आगर घाट पर नदी पार करने के बाद उस तरफ एक आश्चर्यलोक है, मोहरा घाट बाजार. यह एक भरा-पूरा बाजार है. यहां सब्जी-भाजी, किराना सामान से लेकर बरतन-कपड़े लत्ते, गहने-जेवर, बिल्डिंग मैटेरियल और सोलर प्लेट तक बिकते हैं. इतने दुर्गम इलाके में जहां आजादी के बाद से आज तक खगड़िया जिले का डीएम आने की हिम्मत नहीं कर पाया, वहां ऐसा बाजार सचमुच इस इलाके के लोगों की जीवटता का ही नतीजा है.

एक स्थानीय दुकानदार बताते हैं कि शहरबन्नी के पास पुल तो पिछले साल बना है, इससे पहले तो यहां आने के लिए दो नदी पार करना और नौ किमी धूरा फांकना पड़ता था. अभी भी एक ही जगह पुल है बाकी तो संकट है ही. वे बताते हैं कि इस जगह कडूमर, मुरला, कनरिया, कवैया, आगर-द, दक्षिणी बोहरवा, उत्तरी बोहरवा, फुलविरया भरात, रैठी, चमैनी महरी, धनपुरा, बोलवारा, सिमरटोका, चिरैया, बेलाही और कलवाहा गांव के लोग हर छोटी-बड़ी चीज खरीदने पहुंचते हैं. इस गांव से सटा मशहूर गुलरिया गांव है, जहां बिलगेट्स भारत में पोलियो के खिलाफ अपने अभियान की शुरुआत करने पहुंचे थे. बड़ी धूमधाम हुई थी. गांव के निर्धन सदा, बबलू सादा और सोने लाल बताते हैं, उस रोज इस गांव में हजार से अधिक लोग जुटे थे. सबके हाथ में कैमरा और तरह-तरह की मशीनें थीं. घर-घर का दौरा हुआ. कई तरह के वादे किये गये. सड़कें बनेगी, पुल बनेगा. एक-एक घर पक्का हो जायेगा. मगर सब झूठ साबित हुआ. उस रोज के बाद एक सरकारी आदमी गांव नहीं आया है. यह पूछने पर कि उस रोज आपके गांव में कौन आया था, जरा नाम बताइये. निर्धन सदा ने कहा- बिलगोट... बिलगोट्स... किन शायद यही नाम था.

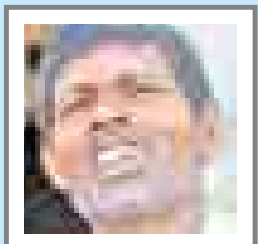

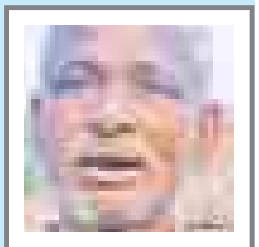

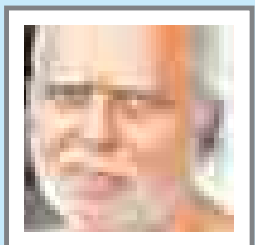

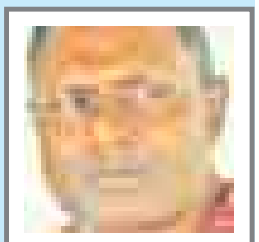

रेत और नदी यही है यहां रास्ता

(आईएम4चेंज मीडिया फैलोशिप के तहत प्रकाशित)

यदि आलसी खेती करें, चोर चुरावै या सूखा परे.
(यदि आलसी लोग खेती करें, तो उसकी फसल चोर चुरा कर ले जायेगा या सिंचाई के बिना खेत सूखा ही रह जायेगा.)